किसी भी समाज की वास्तविक तस्वीर वहाँ की स्त्रियों की स्थिति और उसके साथ होने वाले व्यवहार के माध्यम से स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। दुनिया के हर हिस्से में स्त्रियाँ शोषण, अत्याचार और अस्तित्व मूलक समस्याओं से जूझती रही हैं और ये सिलसिला आज भी जारी है। अगर स्त्रियों ने अपनी बेहतरी के लिए कभी कुछ प्रयास किया है तो उसके हर प्रयास को पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने कुचल दिया, किंतु फ्रांसीसी क्रान्ति के दौरान स्त्रियों ने अपने हक में जो आंदोलनात्मक लड़ाई छेड़ी वह तब से लेकर आज तक जारी है।

भारत में स्त्री शोषण की लंबी परंपरा रही है। इस शोषण की जिम्मेदार पुरुषवादी व्यवस्था है। स्त्री शोषण की इस प्रक्रिया को स्थायी और सर्वस्वीकृत बानने में धर्म-ग्रंथो संहिताओं एवं स्त्री विरोधी अमानवीय सामाजिक रूढ़ियों की अग्रिम एवं निर्णायक भूमिका रही है। शोषण और गुलामी की इस प्रक्रिया के बीच इसके विरुद्ध स्त्री मुद्दों में उनके प्रतिरोध और संघर्ष के स्वर साहित्य और जीवन में उभरते रहे हैं। जो आज सत्ता और साहित्य की निर्णायक आवाज बन गई है साथ ही स्त्री शोषण और पराधीनता के आधारों पर बेबाक चोट कर रही है। स्त्री चेतना के इस आधार से हिंदी साहित्य भी अछूता नहीं रहा है।आज का साहित्य विमर्श स्त्री-विमर्श के बिना पूरा नहीं होता है। स्त्री-विमर्श का आरंभिक उद्देश्य पितृसत्तात्मक समाज व संस्थाओं में पुरुष वर्चस्वता एवं जेंडर आधारित भेदभाव को खत्म कर स्त्री को उसका अधिकार एवं समानता दिलाना रहा है। आज की स्त्री जितनी आसानी से अधिकार की बात करती है वह एक लंबे वैचारिक संघर्ष के फलस्वरूप सामाजिक नजरिए में आए बदलाव का नतीजा है। समाज के

नजरिए को बदलने और स्त्री के मुद्दों को उठाने, स्त्री को स्त्री संदर्भ में देखने में स्त्रियों के साथ-साथ पुरुष बुद्धिजीवियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसका प्रतिफलन सामाजिक नियम-कानूनों में बदलाव और उसके स्त्री के प्रति ज्यादा संवेदनशील होने में हुआ है।

स्त्री मुद्दों को उठाने और स्त्रियों के प्रतिरोध और संघर्ष को धार प्रदान करने में हिंदी उपन्यासों की अग्रिम एवं असरदार भूमिका रही है। भगवानदास मोरवाल हिंदी के एक ऐसे ही उपन्यासकार हैं, जिनके उपन्यासों का मूल स्वर स्त्री स्वाधीनता का है। इनके द्वारा उठाए गए स्त्री मुद्दे आज के नारीवादी चिंतन को नई दिशा देते हैं। वे अपने उपन्यासों के माध्यम से परंपरा पोषित स्त्रियों के नारकीय जीवन की तह तक जाते हैं। और समाज की यथास्थितिवादी, रूढ़िवादी और मर्दवादी शक्तियों से दो-दो हाथ कराते हैं।

'बाबल तेरा देस में' उपन्यास में मोरवाल मेवात जनपद की स्त्रियों की भाषा-बोली, आशा-आकांक्षा, उनकी व्यथा और कसक को गहरी संवेदना के साथ अभिव्यक्त किया है। इसमें जहाँ एक ओर मेवात जनपद की सामाजिक संस्कृति और लोक जीवन का प्रभावशाली चित्र उभरता है। वहीं दूसरी ओर पुरुष सत्ता के सदियों पुराने वर्चस्व वाले समाज में स्त्री की शोषण व व्यथा और उसके विरोध में नई पीढ़ी के सघर्ष एवं प्रतिरोध का जीवंत रूप भी देखने को मिलता है। स्त्री के इस शोषण में परायों के साथ उनके अपने सगे भी शामिल हैं।

प्रस्तुत विषय में शोध करने का उद्देश्य उपन्यास के माध्यम से स्त्री से संबन्धित उन स्थितियों एवं कारणों की पड़ताल करना है जिनकी वजह से स्त्रियाँ आज भी समाज में विकास व समानता की मुख्यधारा से अलग-थलग हैं या हो रही हैं। साथ ही इस वर्ग की साहित्य में उपस्थिति एवं उन साहित्यकारों को जानना भी है जो उनके जीवन से जुड़ी समस्याओं, जटिलताओं, शोषण के तरीकों तथा उनके प्रतिरोध व संघर्ष को उद्घाटित कर स्त्री मुक्ति के मार्गों की तलाश करते हैं। भगवानदास मोरवाल ने 'बाबल तेरा देस में' उपन्यास के माध्यम से स्त्री से जुड़े इन मुद्दों को संपूर्णता में समझा गया है।

प्रस्तुत शोध संबंधी सामग्री का संग्रह करके व्याख्या और विश्लेषण किया गया है, जिसके लिए अंतरानुशासनिक, आलोचनात्मक और विवेचनात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध चार अध्यायों में विभक्त है-

पहला अध्याय 'भगवानदास मोरवाल : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं विचार धारा' है। जिसको तीन उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। पहले उप अध्याय में व्यक्तित्व के अंतर्गत लेखक का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। दूसरे उप अध्याय कृतित्व के अंतर्गत रचना कर्म पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे उप अध्याय में लेखक के वैचारिक सरोकारों का अध्ययन किया गया है।

दूसरा अध्याय 'नारिवाद की अवधारणा और इतिहास' है। इसको पाँच उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। पहले उप अध्याय 'नारिवाद' में नारीवादी अवधारणा को समझा गया है। दूसरे उप अध्याय 'नारिवाद के प्रकार' में प्रमुख नारीवादी आंदोलनों

के सिद्धांतों को समझा गया है। तीसरे उप अध्याय ‘पश्चिमी नारीवादी आंदोलन का भारत पर प्रभाव’ में भारतीय समाज में स्त्री चेतना के विकास को दिखाया गया है। चौथे उप अध्याय ‘भारत में औपनिवेशिक शासन और स्त्री मुद्दे’ में स्वतन्त्रता पूर्व स्त्रियों की स्थिति को दिखाया गया है। अंतिम उप अध्याय ‘हिंदी कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श’ है। जिसमें स्त्री की साहित्यिक उपस्थिति एवं उसके सरोकारों पर विचार किया गया है।

तीसरा अध्याय ‘बाबल तेरा देस में’ : मेवाती समाज और स्त्री’ हैं। जिसे तीन उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। पहला उप अध्याय ‘मेवाती समाज की संरचना’ है। जिसे पारिवारिक और जातिगत संरचना उप शीर्षकों के अंतर्गत समझा गया है। दूसरा उप अध्याय ‘मेवाती समाज में स्त्री दशा’ है जिसमें हिंदू और मुस्लिम (मेव) दोनों समुदायों की स्त्रियों की स्थिति का विवेचन किया गया है। तीसरा उप अध्याय ‘मेवाती समाज में धर्म और संस्कृति’ है जिसमें मेवात क्षेत्र की संश्लिष्ट, संगुम्फित गंगा-जमुनी संस्कृति को समेकित रूप में दिखाया है।

चौथा अध्याय ‘बाबल तेरा देस में’ चित्रित स्त्री मुद्दे तथा प्रतिरोध’ है। जिसमें बाल विवाह, शिक्षा, घरेलू हिंसा, महिला तस्करी, बलात्कार तथा तलाक जैसे मुद्दों का नारीवादी दृष्टि से आलोचनात्मक विश्लेषण किया गाय है।

उपसंहार के अंतर्गत अध्यायों का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया गया है।

इस लघु शोध-प्रबंध को मूल आकार देने के लिए सबसे पहले शोध निर्देशक प्रो. शंभु गुप्त का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे हिंदी कथा साहित्य विशेषकर उपन्यासों में स्त्रियों के

मुद्दे को नारीवादी दृष्टि से समझने के लिए प्रेरित किया और शोध कार्य में निरंतर रागात्मक सहयोग एवं मार्गदर्शन करते रहे। साथ ही विभाग के समस्त सदस्यों का भी आभारी हूँ जिनके समय-समय पर सहयोग व मार्गदर्शन से इस शोधकार्य को सही समय एवं सही ढंग से सही रूप प्रदान कर सका।

उन सबका हार्दिक रूप से धन्यवाद और आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध कार्य को सम्पन्न कराने में सहयोग दिया। साथ ही अपने सभी डब्लू. एस. ग्रुप के साथियों का विशेष आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिनकी वजह से मैं इस लघु शोध कार्य को सही तरीके से पूर्ण करने में कामयाबी प्राप्त की।

***